"चतुराई"

न सुनने में मुक्ति है ! न पढ़ने में ! न शक्लें देखने में !

"पढ़ना लिखना (सुनना-देखना) चातुरी । इह तो बात सहल । काम दहन-मन बस करन-गगन चढ़न मुश्किल ।"

गुरू केवल शब्द (रागमई प्रकाशित आवाज) नाम (प्रकाश), बचनों का केवल व्यवहारिक स्वरूप होना ही मुक्ति का विचार है ! "अमलां ऊते होन निबेड़े खड़ियां रहन गियां जातां !" (जाता) का भाव जीव द्वारा अपनाई गई मत-धर्मों की खोखली क्रियाऐं

)। इन अपनाई गई चतुराईयों से जीव का कल्याण कैसे कल्पना में भी सम्भव हो सकता है ?

"कहै प्रभ केवल शब्द (आवाज) नाम (प्रकाश), अवर, अवर किछ कीजै ! सभ बाद सीगार फोकट-फोकटइआ । कीओ सीगार मिलण के ताई, प्रभ लीओ सुहागिन थूक मुखि पईआ !" इस थूक को कुछ आत्माओं ने चौरासी लाख किस्म का बयान किया है । चौदह इन्द्रियों के स्वाद का रूप बनी हुई आत्मा इस वक्त भी इस थूक को चाटती हुई इसे पढ़ रही है । अपनी अपनाई हुई चतुराई के फलस्वरूप ये इसकी महान उपलब्धि है । ("पापी सिउ तन गडिया - थुका पइआ तित !")

"हर जप मंत गुर (रागमई प्रकाशित आवाज केवल) उपदेश लै जापह; तिन्ह अंत छडाऐ जिन्ह हर प्रीत चितासा । जन नानक अनदिन नाम (प्रकाश) जपह हर संतह; इह छूटण का साचा भरवासा !" जपने का भाव केवल आत्मा का शब्द (आवाज) को सुनना तथा नाम (प्रकाश) को देखना मात्र है । (सेवा सुरत सबद चित लाये) ही सिर्फ आत्मा के कल्याण का साधन है । सुरत - सबद भव सागर तरिये नानक नाम वखाणे !, समस्त वाणी (श्री गुरू ग्रन्थ साहिब) में गुरू लफज का भाव केवल शब्द (रागमई प्रकाशित आवाज) नाम (प्रकाश), है । गद्दीधारियों अथवा महन्तों द्वारा अपने ऊपर घटाये गये अर्थों का

इस में कल्पना में भी कहीं विचार नहीं है । यह लफज केवल परमात्मा लफज की जगह प्रयोग किया गया है "सबदै" "धरती-सबदे आकास - सबदे-सबद भइआ परगास । सगली सृसटि सबद के पाछे - नानक सबद घटे-घट आछे ।" "नाम के धारे सगले जंत । नाम के धारे खंड ब्रहमंड । नाम के धारे सिम्रित-बेद-पुरान । नाम के धारे सुनन गिआन-धिआन । नाम के धारे आगास-पाताल । नाम के धारे सगल आकार । नाम के धारे पुरीआ सभ भवन । नाम के संग उधरे सुन स्रवन ।" "कर किरपा जिस आपनै नाम लाए । नानक चउथे पद महि - सो जन गत पाए ।"

सबद गुरू (केवल रागमई प्रकाशित आवाज) सुरत (आत्मा) धुनि चेला ! इन बाजारी चतुराईयों से ऊपर उठना ही केवल मानव जन्म का दुर्लभ अर्थ है निश्चित रूप से !